REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

अज्ञेय के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

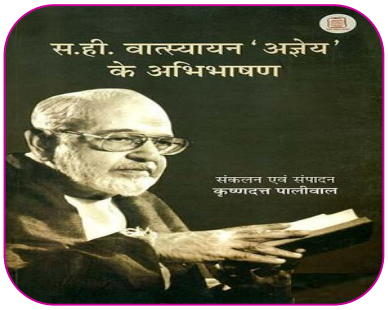

डॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय
अमरावती

जिस मानव समुदाय में एकता की एक सहज लहर हो उसे राष्ट्र कहते हैं। भारतीय समुदाय में एकता की यह लहर 19 वीं शताब्दी में व्यापक स्तर पर देखने को मिलती है। भारतीय जीवन के इसी विषम संघर्ष के समय में हिंदी के महान कवि अज्ञेय का जन्म हुआ था। देश अंग्रेजों के चंगुल में फसा था। अंग्रेजों की शोषणवृत्ति और अन्याय–अत्याचारों के कारण धीरे–धीरे उनके प्रति आक्रोश बढ़ता हुआ स्वाधीनता संग्राम के रूप में फूट पड़ा था। एक ही समय में महात्मा गांधी तथा भगतसिंग के नेतृत्व में देशव्यापी आंदोलन आगे बढ़ रहा था। सभी जानते हैं कि गांधीजी अहिंसा के मार्ग से आजादी का सपना देखा था वहीं चंद्रशेखर आज़ाद, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंग, राजगुरू आदि युवाओं ने सशस्त्र क्रांतिकारी मार्ग पर चलकर आजादी के लिए बलिवेदी पर चढे थे। इससे पता चलता है कि दोनों विचारधाएँ अलग थी, परन्तु उद्देश्य एक ही था देश को आजादी दिलाना। देश के अधिकांश युवा क्रांतिकारी संगठनों से जुड़कर अंग्रेजों से सशस्त्र लोहा ले रहे थे उनमें से एक अज्ञेय थे। अज्ञेय के काव्य में राष्ट्रीय विचारों की अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता प्राप्ति, देशोद्धार एवं देश के प्रति गौरव एवं तत्सम्बधी चेतनादि के रूप में हुई।

''मानव मूल्यों का श्रेणीक्रम निर्धारित करते समय राष्ट्रीय भाव या विचार अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन्हीं मूल्यों से प्रेरित होकर सभी आंदोलन परिचालित होते हैं। किसी भी राष्ट्र की यदि अपनी सरकार हो तो देशभक्ति और राष्ट्रीय विचारों मे अन्तर ही समाप्त हो जाता है। इन्हीं विचारों में सर्वाधिक प्रचलित राष्ट्र के प्रति गौरव की अभिव्यक्ति है। संकुचित अर्थ में राष्ट्रवाद का प्रयोग सैनिक या राजनैतिक लाभालाभ के लिए किया जाता है। दूसरी ओर इसी से प्रेरित होकर परतंत्र देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन का श्रीगणेश किया जाता है और यदि देश स्वतंत्र हो तो देश का गौरव और राष्ट्रीय चेतना–अभिवृद्ध करने में इसका उपयोग लाभप्रद होता है।''[1]

आजादी के आंदोलन के दौर में हिंदी के दर्जनों कवियों ने राष्ट्रप्रेम की कविताएं लिखी हैं। जिनमें राष्ट्रप्रेम की भावनाएं मुखारित हुई हैं। अज्ञेय ने भी पूरी निष्ठा और इमानदारी से राष्ट्र के प्रति सच्ची भावनाएं प्रकट की है। इसमें कल्पना नहीं है, झूठी अनुमति नहीं है वरन भारत का सही रूप में साक्षात्कार हैं। अज्ञेय की राष्ट्रीय चेतना का प्रवाह केवल राष्ट्रसंबंधी धारणाओं की स्वीकृति मात्र नहीं है, वरन् इस चेतना का विस्तार विभिन्नता में राष्ट्रीय एकता का संकेत करना है। अज्ञेय की कविता में राष्ट्रप्राप्ति के पूर्व अधिक जागरूक और सस्वर दिखाई देता है। अज्ञेय की बेन्दी 'स्वप्न' में संकलित बद्ध! 'बन्दी और विश्व', 'अखंड ज्योति', रक्तस्नात', 'हमारा देश', 'छब्बीस जनवरी', 'जनपथ–राजपथ, 'जीवन–दान', 'कीर की पुकार', 'देश की कहानीः दादी की जुबानी', 'परायी राहे', 'रक्तस्नात वह मेरा साथी', 'निश्पाप', आदि कविताओं में विशेष दृष्टव्य हैं।

कवि अज्ञेय महान रचनाकार के साथ ही महान देशभक्तों की श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी थे। देश के लिए उन्होंने जेल में यातनाएं झेली थी। देश के आजादी के बाद भी देश के प्रति उनकी निष्ठा कम नहीं हुई वे देशहित में अपनी देशभक्ति परक कविताएं लिखते रहे। उनकी कविताओं का अध्ययन करने का बाद पता चलता है कि उनका राष्ट्रीय चिंतन सूक्ष्म था और विचार उदात्त थे। अज्ञेय ने देश के लिए त्याग, उत्सर्ग, समर्पण और बलिदान को सबसे ऊपर बताया। बंदीगृह में रहकर अनंत यातनाएं उन्हें दी गई परन्तु हार नहीं मानी। उनकी देशभक्ति आज भी हमें प्रेरित करती है।

'जीवनदान' कविता में अज्ञेय ने बंदीजीवन की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा है कि बंदी के प्राण बंदी होते हुए भी स्वतंत्र होते हैं। उनके पैरों में बेड़ियां होती है, शरीर कारागृह की कलिमा में घिरा होता है। प्रत्येक अंग घावों से भरा होता है, हृदय निराशा से भरा होता है, भूख और प्यास भी नियमों से बंधी होती है। उनकी अंतिम संपत्ति भी छीनी हुइ होती है किन्तु वह बंदी के बलिदान और जीवनदान को देखकर लज्जित हो जाती है –

मुक्त बन्दी के प्राण!
पैरों की गति श्रृखंल–बाधित
क्या कारा – कलुषाच्छादित
पर किस विकल प्रेरणा–स्पंदित
उद्धत उसका गान!
अंग अंग उसका क्षत–विह्वल
हृदय हताशाओं से घायल
किन्तु असहय रणातुर उसकी
आत्मा का आहवान!
उसकी भुख प्यास भी नियमित
उसको अन्तिम संपत्ति परिह्वत
लज्जित पर बलि–दान देकर
उसका जीवनदान!
मुक्त बन्दी का प्राण!''[2]

अज्ञेय का देश के लिए जो जज्बा था वह क्षणिक या आजादी तक का नहीं था। देशभक्ति का भाव उनके रगों में बहता था इसलिए देश को जब जब उन्होंने संकट में या विषम स्थिति में देखा क्रांति की भावना उनके मन में उमड़ आयी। 'गा दो' यह कवि की 'बंदी स्वप्न' की कविता है जिसमें कवि ने स्वयं की कवित्व शक्ति से प्रार्थना करते हैं कि एक बार फिर क्रांति की जरूरत है अतः क्रांति की प्रेरणा देकर उनके जीवन को क्रांतिमय बना दे –

''कवि एक बार फिर गा दो!
एक बार इस अंधकार में फिर आलोख दिखा दो!
अब मिलित है मेरी आंखे
पर मैं सूर्य देख आता हूँ,
आज पड़ी है कड़ियां पर मैं
कभी भुवन भर में छाया हूँ,
उस अबाध आतुरता को कवि,
फिर तुम छेड जगा दो!
आज व्यक्त हूँ, पर दिन था जब
सारा जम अँगुली में लेकर
ईश्वर सा मैंने उसको था
एक स्वप्न पर किया निछावर!
उस उदारता को ज्वाला सा उर में पुनःजला दो!
बहुत दिनों के बाद आज कवि!
मुझ में फिर कुछ जाग रहा है,
दर्प भरे अप्रतिहत स्वर में
जाने बया कुछ माँग रहा है
मेरे प्राणों के तारों को छूकर फिर तडपा दो!''[3]

इस प्रकार अज्ञेय स्वयं की कवित्व शक्ति को पुकारते हैं कि हे कवि! एक बार फिर से क्रांति का गीत गा दो और इस अंधकार में प्रकाश भर दो। अब मेरी आँखे बंद है किन्तु मैं सूर्य को देख आया हूँ। आज मेरे हाथ, पैरों में बेड़ियां हैं किन्तु मेरा प्रताप कभी सारे भूवन में छाया हुआ था। हे कवि! मुझे प्रेरित करके स्वतंत्रता जैसी पहले जैसी आतुरता को मुझमें फिर से जगा दो। आज मैं बहिष्कृत हूँ लेकिन एक दिन वह भी था, जग मैंने सारी धरा को ईश्वर की भांति अंजुली में लेकर उसे एक आजादी के स्वप्न पर न्यौंछावर कर दिया था। स्वतंत्रता के लिए सभी सुखो को त्याग किया था।आग की भांति उस उदारता को मेरे हृदय में फिर से जगा दो।

उक्त कविता में कवि की अनन्य देशभक्ति का परिचय और देश के लिए मर मिटने की चाह का पता चलता है। कवि अज्ञेय अपने युग के सत्यान्वेषी कवि थे। अभिव्यक्ति के खतरे उठाना उनका शौक था। क्रांतिकारी अज्ञेय ने कारावास में काफी समय बिताया था। मृत्यु को बहुत करीब से अनुभव किया था। अज्ञेय जैसे कई सच्चे देशभक्त वीर थे जिन्होंने देश के लिए बलिदान दिया लेकिन इतिहास ने उनकी कभी खबर नहीं ली। 'इतिहास का न्याय' इस कविता में अज्ञेय ने उन देशभक्त वीरों के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा है कि उन सच्चे देशभक्तो, को वीरों को कभी न्याय नही मिला, लेकिन जो पाखंडी देशभक्त अपने प्राणों को बचाकर लौट आये वे भगौडे वीर और विजयी कहलाएं वे आजादी वे आजादी का आनंद भोग रहे हैं और सच्चे देशभक्त वीर युद्धभूमि में अनाहृत उपेक्षित पडे रहे। इन सच्चे वीरो को विजय का श्रेय नहीं मिला वे विजय के अधिकारी नहीं बने –

''जो जिये वे ध्वजा फैराकर घर लौटे
जो मरे वे खेत रहे।
जो झूमते नगर लौटे, डूबे जय रस में,
(खंडहरों के प्रेत और कौन हैं – जिनके मुंड़े हो पैर पीछे को)
जो खेत रहे थे अंकुरित हुए
इतिहासों की उर्वर मिट्टी में,
कुसुमित पल्लवित हुए स्वप्नकल्पीत लोकमानस में।''4

अज्ञेय ने 'रक्तस्नात वह मेरा साकी' कविता में मातृभूमि की दुर्दशा का वर्णन करते हुए दुखिया भारत माता के प्रति अपने भाव प्रकट किये हैं –

''तड़प उठा मैं, चीख उठा अब मेरा, हा! निस्तार कहां है?
मेरे हित कलंक की कारिख का अब गुरूभार यहां है
फट जा आज धरित्री! मेरी दुस्सह लज्जा आज मिटा दे –
रक्त स्नात वह मेरा साकी मेरी दुखिया भारत माँ है।''[5]

'छब्बीस जनवरी' यह अज्ञेय की देशभक्तिपरक दीर्घ कविता है। इस कविता में स्वतंत्रता के महत्व का वर्णन किया है। छब्बीस जनवरी 1950 को डॉ. अम्बेडकर के द्वारा बनाया गया भारत का संविधान लागू हुआ था। इसी दिन से लोकतांत्रिक प्रणाली का प्रारंभ हुआ था। आज इसे पूरा देश गणतंत्र दिवस के रूप में मनाता है। छब्बीस जनवरी को राष्ट्रीय पर्व का दर्जा प्राप्त है। अज्ञेय ने आलोच्य कविता के माध्यम से देश के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं –

''आज हम अपने युग के स्वप्न को यह
नयी आलोक मंजूषा समर्पित कर रहे हैं।
आज हम अक्लानत, ध्रुव, अविराम गति से
बढ़े चलने का कठिन व्रत धर रहे हैं
निराशा की दीर्घ तमसा से सजग रह हम

द्रुताशन पालते थे साधना का
आज हम अपने युगों के स्वप्न को
आलोक मंजूषा समर्पित कर रहे हैं।''[6]

अज्ञेय कहते हैं कि आज हम स्वतंत्रता प्राप्त करके अपने युग के स्वप्न को यह स्वतंत्रता की नई आलोक से भरी हुई मंजूषा समर्पित कर रहे हैं। आज हम अथक, अटल, निरंतर गति से आगे बढ़ जाने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं। आज हम बहुजनों के हित के लिए अपनी इच्छा से नये आत्म अनुशासन को ग्रहण कर रहे हैं। हम निराशा की गहरी रात्री में सजग रहकर साधना की आग को जलाये रखते थे वह आज पूरी हो गई है।

''सूनो हे नागरिक! अभिनय सभ्य
भारत के नये जन राज्य के
सुनो! यह मंजूषा तुम्हारी है।
पला है आलोक चिर–दिन यह तुम्हारे स्नेह से,
तुम्हारे ही रक्त से।
तुम्ही दाता हो, तुम्ही होता, तुम्ही यजमान हो।
यह तुम्हारा पर्व है।
भुमि–सुतः इस पुण्य भू की प्रजा, स्त्रष्टा तुम्ही हो
इस नये रूपाकार के
तुम्ही से उभ्दूत हो कर बल तुम्हारा
साधना का तेज–तप की दीप्ति तुमको
नया गौरव दे रही है।
यह तुम्हारे कर्म की ही प्रस्फुटन है
नागरिक, जय! प्रजा जन, जया राष्ट्र के सच्ची विधायक, जय''[7]

इसप्रकार कवि अज्ञेय देशवासियों को कहते हैं कि यह स्वतंत्रता तुम्हारी है। इसमें निहित अपार आलोक तुम्हारे स्नेह से और तुम्हारे ही रक्त से पला है। तुम्ही इसके दाता, यजमान, यज्ञ करनेवाले हो। यह तुम्हारा ही पर्व है। तुम्ही इस भूमि के पुत्र, प्रजा, नये युग के रचयित तुम्हारा बल साधना के तेज और दीप्ति का रूप धारण करके तुम्हें नया गौरव प्रदान कर रहा है। ये तुम्हारे ही कर्मो का फल है। हे नागरिक तुम्हारी जय हो! हे राष्ट्र के सच्चे विधायक तुम्हारी जय हो।

''हम आलोक मंजूषा समर्पित कर रहे हैः और मंजूषा तुम्हारी है
और यह आलोक तुम्हारे ही अडिग विश्वास का आलोक है।
किन्तु रूपाका यह केवल प्रतिज्ञा है
उत्तरोत्तर लोक कल्याण ही है साध्यः
अनुशासन उसी के हेतु है।
यह प्रतिज्ञा ही हमारा दाय है लम्बे युगों की साधना का,
जिसे हमने धर्म जाना।
स्वयं अपनी अस्थियां देकर हमी ने असत पर
सत की विजय का मर्म जाना।
सम्पुटित पर हाथ, जिसने गोलियां निज वक्ष पर झेली,
शमन कर ज्वर हिंसा का
उसी ने नत शीश धीरज को हमारे स्तिमित चिर संस्कार ने
सच्चा कृति का मर्म जाना।
साधना रूकती नहींः आलोक जैसे नहीं बँधता।

स्मरण कर लो इसी पथ पर गिरे सेनानी जयी को।"[8]

इस प्रकार अज्ञेय अपने देशवासियों को कहते हैं कि इस आजाद देश को तुम्हें समर्पित करते हैं। यह तुम्हारी स्वतंत्रता है। अब इसकी रक्षा करना और आगे बढ़ाना तुम्हारा कर्तव्य है। यह आलोक तुम्हारा अचल विश्वास का आलोक है। यह स्वतंत्रता की प्राप्ति केवल प्रतिज्ञा है, इसके बाद लोक कल्याण करना तुम्हारा साध्य है। कवि आगे कहते है कि यह स्वतंत्रता तुम्ही लंबी साधना, संघर्ष का फल है। इसके लिए लोगों ने आहुतियां दी हैं। गांधीजी ने छाती पर गोलियां खाकर भी हिंसा की भावना का परित्याग किया है। जैसे प्रकाश को बाँधा नहीं जा सकता वैसे ही साधना भी नहीं रूक सकती। अर्थात देश के हित में अभी बहुत कुछ करना बाकी है। स्वतंत्रता के विजयी सेनानीयों को स्मरण करों। आज हम अपने स्वतंत्रता के युगों के सपने को पूरा करने के लिए आलोक भरी मंजूषा समर्पित कर रहे है।

'अखंड ज्योति' कविता में कवि ने स्वतंत्रता की अखंड ज्योति से निरंतर व्यापकतर होने की प्रार्थना की है।

"कर से कर तक, उर से उर तक बढ़ती जा,
ओ ज्योति हमारी,
छप्पर तल से महल शिखर तक चढ़ती जा,
जो ज्योति हमारी!
पैतिस कोटि शिखाएं जल कर कोना–कोना
दीपित कर दें–
एक भव्य दीपक सा भारत जगती को आलोकित कर दे
हमें दुख है, हमें क्लेष है – उसे जला डालेगी ज्वाला।
हमने न्यास नहीं पाया है, हम ज्वाला से न्यास करेंगे
धर्म हमारा नष्ट हो गया, अग्नि धर्म हम हृदय घरें में
मिटना स्वयं, बनाना जम को, जलना स्वयं जलाना जग को
शोणित तक से सींच स्वच्छ रखना उस स्वतंत्रता के यूग को
जग में बहुत मिलेंगे आजादी के गाने गानेवाले,
गली–गली में गत गौरव के पोले गाल बजानेवाले
ले तू इस अभिमानी, दानी भारत के भी फूल निराले,
दिवाने परवाने हँसकर अपना–आप जलाने वाले।
बीते दिन अब निश्चलता के, शान्त कहाँ उदभ्रान्त कहां है?
युद्ध हेतु कटिबद्ध हुए बस, पैतिस कोटि कृतान्त यहां है!
कहीं बच गया है कोई तो तू उसमें भी स्फूर्ति जगा दे
विश्व उँचा दे, ज्योति! जगत में आग लगा दे! आग लगा दे!"[9]

इस प्रकार अज्ञेय कहते हैं कि हे हमारी स्वतंत्रता की ज्योत तू हाथ–से–हाथ तक और हृदय से हृदय तक बढ़ती जा। छप्पर से लेकर महल की चोटी तक चढ़ती जा। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्वतंत्रता का अपार प्रेम हो। स्वतंत्रता को प्राप्त करने की अपार शक्ति हो। सभी भारतवासी भारत के कोने–कोने तक स्वतंत्रता के अलौकित कर दे। स्वतंत्रता की आग में हमारे दुःख, कष्ट जल जायेंगे यह आग हम पददलितों के हृदय से उठकर सारे आकाश में व्याप्त हो जायेगी। हम क्रांति के द्वारा न्यास प्राप्त करेंगे। विदेशी शासकों ने हमारा धर्म नष्ट किया अतः हम उसकर रक्षा के लिए क्रांति का धर्म धारण करेंगे। स्वयं को मिटाकर, जलाकर, खून से सींचकर स्वतंत्रता के मार्ग को स्वच्छ करेंगे। जगत में आजादी का गीत गाने दिखावटी क्रांतिकारी बहुत मिलेंगे किन्तु भारत के जैसे सच्चे क्रांतिकारी नहीं मिलेंगे।

'विश्वास' कविता में कवि अज्ञेय ने स्वतंत्रता के आलोक को संबोधित करते हुए स्वयं के प्रति अटूट आस्था व्यक्त की है –

''तुम्हारा यह उद्धत विद्रोही
घिरा हुआ है, जग से परे है सदा अलग, निर्मोही!
जीवन सागर ठहर–ठहर कर उसे लीलने आता दुर्धर
पर वह बढ़ता ही जाएगा लहरों पर आरोही![10]

'बंदी ग ृह की खिड़की' यह 'बंदी स्वप्न' की कविता है। प्रस्तुत कविता में कवि ने स्वतंत्रता के प्रति अपने अपार प्रेम को व्यक्त किया है।

''ओ रिपु! मेरे बंदी गृह की तू खिड़की मत खोल!
बाहर स्वतंत्रता का स्पंदन!
मुझे असह उसका आवाहन!
मुझे कँगले को मत दिखला वह दुस्सह स्वप्न अमोल।''[11]

इसप्रकार अज्ञेय कहते हैं कि हे रिपु! तू मेरी बंदी गृह की खिडकी मत खोल, क्योंकि बाहर स्वतंत्रता का स्पंदन है जिसका आहवान मेरे लिए असह्य है। अंतः मुझ निर्धन को तू दुसह्य और अमूल्य स्वतंत्रता रूपी स्वप्न मत दिखला।

'आजादी के बीस बरस' कविता में अज्ञेय ने आजादी के बाद की विडंबना पर व्यंग्य किया है। इस कविता में आजादी के बाद का इतिहास है। कवि का कहना है कि आजादी के बीस बरस से तुम्हें को कुछ नहीं मिला पर तुम्हारे बीस बरस से आजादी को क्या मिला? इसका जवाब देते हुए कवि कहते है –

उन्नीस नंगे शब्द?
अठारह लचर आंदोलन?
सत्रह फटीचर कवि?
सोलह लुंजो–हॉ, कह लो, कलाएं –
पर चोरी चापलूसी सेंध मारना, जुआखोरी
.....
आजादी के बीस बरस से बीस बरस की आजादी से
तुम्हें कुछ नहीं मिलाः
मिली सिर्फ आजादी!''[12]

उक्त कविता में मूल्यों का विघटन, देश की सच्चाई को बयान किया है। कवि की नज़र में आजादी एक नंगा शब्द है जिससे कुछ भी हमारे हाथ नहीं लगा। 'मिली सिर्फ आजादी' की व्यंजना यहां अत्यंत मर्मात्मक है। ''आलोच्य कविता में एक कटु व्यंग्य अनुरूप शब्दावली में व्यक्त होता है। अज्ञेय देश की जनता को कहते हैं। तुमने भी देश के लिए कुछ नहीं किया, सिर्फ फायदा उठाया आजादी का। कवि की यह पंक्तियाँ देखिए –

''पन्द्रह .... बारह ...दस.... यों पांच चार और तीन
और दो और एक
और फिर इन्कलाबी स्तुन्न
जिसकी गड्डुली में बँधे तुम
अपने को सिद्ध, पीर, औलिया जान बैठे हो![13]

इसप्रकार संख्यांक कम करते करते 'शून्य' तक आने की इस प्रक्रिया में कवि ने पूरा रहस्य खोल दिया है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया है कि अज्ञेय की राष्ट्रीय चेतना का प्रवाह केवल राष्ट्र संबंधी धारणाओं की स्वीकृति मात्र नहीं है वरन इस चेतना का विस्तार करना है। क्योंकि हमारे देश में विभिन्न जाति, वर्ग, वर्ण के लोग रहते हैं इनमें जब तक एकता का भाव पैदा नहीं होगा अखंड देश कैसे बन सकता है। 'अहं राष्ट्री संगमनी जनानाम' कविता में राष्ट्र की एकता का प्रश्न उपस्थित किया है। कवि अज्ञेय कहते हैं – ब्राम्हण, जाट, काटास्थ, बनिये, अहिर, मौलाना, सरदारजी, मसोही–

यो सब आ गये मेला जुट गया।
यही है नही जान पाया कि इस पंचमेल खिचड़ी में
वह एक समाज कहां छुट गया?
और सिर पर कोल्हू।
इसका भार तू कैसे ढोयेगा
जिसे पेरेंगे जाट, ब्राम्हण, बनिया तेली, खत्री,
मौलावी, कायस्थ, मसीही, जाट व सरदार भुमिहार आहीर
और वे सारे घेरे के बाहर के बेचारे
जो नहीं पहचानते अपनी तकदीरः
तू किस–किस को रोयेगा?
कब बनेगा तो राष्ट्र?''[14]

भोलाभाई पटेल के मतानुसार ''अहं राष्ट्र संगमनी जनानाम'' ऋग्वेद के इस सूत्र का नया अर्थ इस कविता के संदर्भ में उभरता है। ऋग्वेद की संगम की भावना आजकल जिस रूप में पलट गयी है, उसका सव्यंग्य आलेखन यहां है। कवि के व्यंग्य की तीव्रता दी है बोलचाल की भाषा के प्रयोग से। बोलचाल की लय का यहां सफल प्रयोग है।'' आलोच्य कविता के माध्यम से अज्ञेय ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर चल रही धर्मांधता और शोषणवृत्ति पर भी व्यंग्य किया है। आज हमारा समाज जिस भ्रष्टता की ओर जा रहा है, जिस शोषण और स्वार्थ को ही प्रजातंत्र का मूल्य मान बैठा है, वहीं सब पूरी सफाई के साथ इस कविता का प्रतिपाद्य है।''[15]

कवि अज्ञेय ने 'तू–फू कोः बारह सौ वर्ष बाद' विषम परिस्थिति में घीरे कवि की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। कवि को इस बात की चिंता है कि हमारा देश सही मायने में राष्ट्र कब हो सकेगा जिसमें आदमी सुख, चैन और सम्मान से जी सके। हमारा प्रजातंत्र प्रजापत्य विरोधी नारों से गूंज रहा है और ये नारे ही हमारी आजादी की अबतक की ईजाद है –

''या जिसे कुछ नहीं मिलता था
उसकी सान्त्वना थी
बहुत–सी–संतानः
भरा पुरा खानदान।
हम तुम, दोस्त नये कवि बेचारेः
प्रजातंत्र में पाते हैं
प्रजापत्य विरोधी नारे
दो या तीन बच्चे बस।
यह कि हमने ईजाद किया
यही एक नया रस।''[16]

उक्त व्यंग्यात्मक कविता चीन के प्रसिद्ध प्राचीन कवि तू–फू को संबोधित करते हुए अज्ञेय ने आधुनिक भारतीय कवियों की भ्रष्ट काव्य प्रकृति पर तीष्ण व्यंग्य किया है।

'पराई राहे' अज्ञेय की सुंदर और छोटी–सी कविता है। इस कविता में कवि ने अपने अमित देश प्रेम की भावना को अभिव्यक्त किया है –

''दूर सागर पार
पराये देश की अनजानी राहें।
पर शीलवान तरूओं की
गुरू, उदार,
पहचानी हुई छाँह।
छनी हुई धूप की सुनहली कमी को बीन,
तिनके की लघु अनी मनके सी बींध, गूँध
फेरती सुमिरनी,
पूछ बैठीः
कहां, पर कहां वे ममतामयी बाहे?''[17]

इस प्रकार कवि कहता है कि पराये देश की राहे अनजानी है, पर अपने देश की छायादार वृक्षों की छाहें उत्कृष्ट और ठदार है। विदेशों में सभी प्रकार के सुख होते हुए भी अपने देश के समान ममता से भरी बाहे नहीं है। उक्त कविताओं के अतिरिक्त 'हमारा देश', हरा भरा है देश, कीर की पुकार, साकी, जनपथ–राजपथ, विश्वास आदि कविताओं में कवि अज्ञेय ने अपनी देशप्रेम की भावना को व्यक्त किया है।

निष्कर्षः –

अज्ञेय अपने युग के प्रतिभावान नवदृष्टिसंपन्न कवि थे। इनकी राष्ट्रीय चेतना से युक्त कविताओं में राष्ट्रीयता का नया स्वर अधिक उभरकर आया है। अज्ञेय की उपरोक्त कविताओं में भारतीय राष्ट्रीयता को अधिक प्रत्यक्ष करते हुए उसे आकाश से धरती पर उतारा तथा उसे जनजीवन से जोडा। इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता के सारे रूप कहीं खंडित रूप में, तो कहीं सश्लिष्ट रूप दिखाई देते हैं। अज्ञेय की राष्ट्रीयता व्यापक थी। आधुनिक थी जिसमें जाति, संप्रदाय, धर्म आदि की संकीर्णता के स्थान पर समग्र देश की संकल्पना थी। उनकी राष्ट्रीय चेतना किसी धर्म या प्रदेश में सीमित न रहकर पूरे देश के लिए थी। उनकी कविता में स्वाधीनता आंदोलन, अंग्रेज शासन से उत्पन्न यातना तथा राष्ट्रीय चेतना का व्यापक स्वर मिलता है, जो राष्ट्रप्रेम के रूप में हमारे लिए प्रेरणा है।

संदर्भ :–

1) Eneyclopeadea for social science p. 231.
2) इत्यलम (बांदी स्वप्न), अज्ञेय पृ. 53
3) इत्यलम (बांदी स्वप्न), अज्ञेय पृ. 59
4) इंद्रधनु – रौंदे हुए ये, अज्ञेय प ृ. 45
5) इत्यलम – अज्ञेय, पृ. 64
6) बावरा अहेरी, अज्ञेय, पृ. 39
7) वही, पृ. 40
8) इत्यलम (बंदी स्वप्न), अज्ञेय, पृ. 57
9) इत्यलम (बंदी स्वप्न), अज्ञेय, पृ. 76
10) इत्यलम (बंदी स्वप्न), अज्ञेय, पृ. 54
11) क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, अज्ञेय, पृ. 12
12) क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, अज्ञेय, पृ. 13
13) क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, अज्ञेय, पृ. 22
14) भोलाभाई पटेल, अज्ञेय एकः अध्ययन, पृ. 53
15) हरिचरण शर्मा, नये प्रतिनिधि कवि, पृ. 20
16) क्योंकि मै उसे जानता हूँ, पृ. 27
17) आँगन के पार द्वार, अज्ञेय, पृ. 23